हिंदी कविता में चित्रित लोकतंत्र

डॉ.निशाराणी महादेव देसाई, सहायक प्राध्यापक, राजे रामराव महाविद्यालय,जत,जि.सांगली
दूरभाष :8600615451 email: nisharanidesai@gmail.com

सारांश:

मानव मन में तरंगीत होने वाली भाव भावनाएँ और अनुभूतियों की सार्थक शब्दों में अभिव्यक्ति साहित्य है. साहित्य एक ऐसा माध्यम है जिसके जरिए समाज में घटित सभी घटनाओं का वर्णन होता है. किसी भी देश या भाषा के साहित्य में वहाँ के सामाजिक ,सांस्कृतिक एवं राजनीतिक पक्षों का यथार्थ चित्रण होता है. लोकतंत्र इससे अछूता कैसे रह सकता है. आज के लोकतंत्र और साहित्य पर विचार करना वर्तमान युग में आए परिवर्तन को देखते हुए अनिवार्य हो गया है. लोकतंत्र या जनतंत्र का शाब्दिक अर्थ है- लोगों का शासन. एक ऐसी शासन व्यवस्था जिसमें जनता अपना शासन खुद चुनती है. लोकतंत्र को स्थापित करने और उसे बनाए रखने में साहित्यकार की विशिष्ट भूमिका होती है.

प्रस्तावनाः

मानव इतिहास में एक समय था जब दुनिया के विभिन्न हिस्सों में मानवता महाराजा के नियंत्रण में रहती थी. उस समय आम जनता को शासन के मामलों में भाग लेने का अधिकार नहीं था. लेकिन शासक अपने शासकों और अधिकारियों की मदद से अपनी इच्छा के अनुसार शासन करता था. लेकिन सभ्यता के विकास ने उस समय को अतीत की कहानी बना दिया है. वह अब एक युग है जब शासकों को सामान्य लोगों की इच्छा के अनुसार चुना जाता है. या नियुक्त किया जाता है न की पैतृक या धार्मिक आधार पर. यह सब लोकतांत्रिक प्रणाली के आगमन के परिणाम स्वरूप संभव हो चुका है. आधुनिक युग में लोकतांत्रिक व्यवस्था इतनी लोकप्रिय है कि आधुनिक युग को लोकतंत्र का युग कहा जाता है.

भारत को विश्व में सबसे बड़ा लोकतंत्र वाला देश कहा जाता है. भारतीय व्यवस्था लोकतंत्र की है क्योंकि यहां पर शासन के विभिन्न स्तरों के लिए निश्चित समय में चुनाव होते हैं. पिछले 70 वर्षों से जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों की केंद्र ,राज्य तथा स्थानीय स्तर पर गठीत सरकारें हमारे लोकतंत्र को मजबूत कर रही है. लोकतंत्र का सीधा सरल अर्थ है- लोगों का शासन, जनता के द्वारा जनता के लिए शासन है. यह शासन की वह प्रणाली है जो जनता के प्रतिनिधियों द्वारा संचालित होती है. लोकतंत्र एक शासन व्यवस्था मात्र नहीं हैं, बल्कि यह इससे कहीं अधिक मायने रखता है. यह सरकार की एक व्यवस्था होने के साथ-साथ एक विशिष्ट प्रकार की राज्य व्यवस्था है, एक सामाजिक प्रणाली है.

विषय प्रवेश: निर्धनता, जातिवाद, स्त्री शोषण, सामाजिक धार्मिक वैमनस्य, प्रांतवाद ,सांप्रदायिकता, निरक्षरता ऐसे अनेक चुनौतियों का सामना आज भारतीय जनमानस को करना पड़ रहा है. स्वतंत्रता के पश्चात सरकारों के बड़े-बड़े दावों के बावजूद भी गरीबी की समस्या हमें लगातार परेशान कर रही है. महंगाई, बेरोजगारी, आवास की समस्या आदि योजनाओं पर सरकार अरबों रुपए खर्च कर रही है. यह पैसा सरकारी खजाने में करदाता की कमाई के हिस्से के रूप में आता है. इससे स्पष्ट है कि सरकार द्वारा विकास पर खर्च किया जाने

वाला पैसा पात्रों तक पहुंचते-पहुंचते आधे से कम रह जाता है. और कई जगहों पर यह पैसा पहुंच ही नहीं पाता. इसलिए सरकार की बहुत सारी योजनाएं कागजी बन कर रह जाती है. स्वाधीनता से पूर्व और स्वाधीनता के पश्चात की अगर हम बात करें तो पता चलता है कि स्वाधीनता से पूर्व हम अंग्रेजों के गुलाम थे, उनके अत्याचार, शोषण का शिकार हुए, किंतु आज के परिप्रेक्ष्य में देखें तो स्वतंत्र भारत में रहते हुए भी हम अपने ही चुने सरकार के भ्रष्टाचार के शिकार है. स्वतंत्रता पूर्व लोगों की यही आस रही की हम अपनी सरकार बनाएंगे, जिसमें सभी को हर प्रकार की स्वतंत्रता प्राप्त होगी. लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ. ऐसी स्थिति में साहित्यकार चुप कैसे रह सकता है? हमारे हिंदी साहित्य के साहित्यकारों ने भारतीय जनता के सपनों में बाधक बने तत्वों को साहित्य का विषय बना कर अपनी लेखनी के माध्यम से अभिव्यक्त किया है. साहित्यकारों का लोकतंत्र समता, स्वाधीनता, और बंधुत्व पर आधारित होता है. ऐसे संवेदनशील लोकतंत्र की स्थापना साहित्यकारों का उद्देश रहा है, जो शोषण विहीन हो ,जहां जाति, रंग ,प्रांत एवं धर्म के नाम पर किसी प्रकार का भेदभाव ना हो.

हिंदी साहित्य में ऐसे बहुत साहित्यकार है जिसमें रघुवीर सहाय, मुक्तिबोध, धूमिल, नागार्जुन आदि ने अपने साहित्य के माध्यम से लोकतंत्र पर तीखा प्रहार किया है.

किसी भी देश अथवा समाज के अंतर्गत समाज, धर्म, राजनीति, संस्कृति आदि का समावेश होता है. इसको चलाने की एक प्रविधि होती है जिसे व्यवस्था कहा जाता है. कोई भी विघटित व्यवस्था कल्याणकारी नहीं हो सकती. ऐसी अव्यवस्थित व्यवस्था के प्रति धूमिल की कविताओं में तीव्र आक्रोश एवं असंतोष दिखाई देता है. अतः इस विषम व्यवस्था को दूर करने का एक ही उपाय है- जन क्रांति.

धूमिल वर्ग भेद की दीवार को मिटा कर एक एेसी लोकतांत्रिक व्यवस्था का सपना देखता है, जहां बुरी प्रवृत्तियों का दमन हो, लोक तिरस्कृत ना हो, और ना ही लोकतंत्र के नाम पर कुछ लोग आदमी होने का मजा लूटते हो. पूंजीवादी शासन व्यवस्था के नकाब को हटाकर धूमिल यह जोखिम उठाना चाहते हैं, उनकी सहानुभूति शोषितों के प्रति है.' कविता के भ्रम मे' कविता इस स्थिति को अंकित करती है...

" जहां हवा काली है, जीने का
जोखम है. सपनों का
वयस्क- लोकतंत्र है. आदमी
होने का स्वाद है"1.

जनता के साथ अन्याय हो रहा है, तो भी लोकतांत्रिक सरकार निष्क्रियता से उन अत्याचारों को देख रही है. अत्याचारी व्यवस्था को नष्ट करने की दृष्टि से सरकार ठोस कदम नहीं उठा रही है. सरकार और देश की कानून व्यवस्था भी अपना कर्तव्य पूरा करने में असमर्थ दिखाई देती है. कमजोर लोगों को मारने वाली और शक्तिशालीयों का पक्ष लेने वाली पुलिस से आम जनता का विश्वास उठ चुका है. इसलिए 'मुक्ति का रास्ता' कविता में धूमिल अपना आक्रोश व्यक्त करते दिखाई देते हैं..

" इसके बाद आए थे, अपराध के कानूनी दलाल
एड़ियाँ बजाते हुए. किरचों की मोहर ने

चेहरों को दागी किया था. लाशों की गिनती-
फिर आगजनी, लूट. लेकिन क्या लगा था
आततायियों के हाथ? नफरत की अाच ने
चंद खाली झोपडों को राख किया था."2

स्पष्ट है कि धूमिल ने भ्रष्ट अव्यवस्था पर तीखा प्रहार किया है.

स्वतंत्रता के बाद आम जनता का जो पूंजीपति एवं स्वार्थी राजनेता शोषण कर रहे हैं, उसे उन्होंने 'पटकथा' कविता में अभिव्यक्त किया है. धूमिल कहते हैं हमारे मजदूर और किसान कड़ी मेहनत कर जो कुछ पैदा करते हैं, उससे उनका जीवन चलता है, परंतु उनकी मेहनत का फल उन्हें नहीं मिलता. पूंजीपति अपने धन के बल पर मजदूरों का शोषण करता है, यह शोषण आम जनता, पूंजीपति, सरकार सभी को दिखाई देता है, लेकिन वे सब चुप है. क्योंकि वे स्वयं वर्ग और भ्रष्टाचार में लिप्त है. सरकार पूंजीपतियों का शोषण में पूरा साथ देती है, आम आदमी सब कुछ चुपचाप सह रहा है. और हमारी संसद उसकी दयनीय हालत पर मौन बैठी है ,धूमिल कहते हैं

" एक आदमी रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
यह तीसरा आदमी है, जो ना
रोटी बेलता है, न रोटी खाता है.
सिर्फ रोटी से खेलता है,
मैं पूछता हूं ,यह तीसरा आदमी
कौन है? मेरे देश की संसद मौन है"3

इस कविता के माध्यम से अव्यवस्था पर कड़ा व्यंग किया है.

इसके बाद रघुवीर सहाय की काव्ययात्रा स्वतंत्र भारत में लोकतंत्र की विचार यात्रा है. शासन प्रणाली के रूप में लगभग पांच दशक के लोकतंत्र की विकास यात्रा में रघुवीर सहाय के कवि कर्म में देखने को मिल जाती है. उनकी कविताएं भारतीय लोकतंत्र से जुड़े, आम आदमी की आशाओं, आकांक्षाओ, और सपनों से बुनी गई है. आजादी के बाद लगभग दो दशक मोह और आशावाद में डूबे दिखाई देते हैं. भारत का बुद्धिजीवी वर्ग इसी आशावादीता के कारण एक नए भारत, समाज और नई राजनीति का सपना देख रहा था. इतिहासकार सुनील खिलनानी अपनी पुस्तक' भारत नामा' में इस युग के बारे में कहते हैं....

" उस युग में लोकतंत्र और समाज सुधार की उँची उँची उनकी बातें खूब की जाती थी और शासन पद्धति के तौर पर उस समय का भारतीय लोकतंत्र एक मिसाल था .संसदीय और दलिया कार्य विधियों का अनुपालन करने में बड़े गर्व का अहसास किया जाता था"4

परंतु लोगों की यह आशावादिता अधिक समय तक न रहा सकी. 'एक अधेड़ भारतीय आत्मा में' रघुवीर सहाय लिखते हैं...

" बीस बरस बीत गए
लालसा मनुष्य की तिल तिल कर मिट गई
टूटते टूटते

जिस जगह आकर विश्वास हो जाएगा कि
बीस साल धोखा दिया गया
वही मुझसे फिर कहा जाएगा
विश्वास करने को"5

इस स्थिति के लिए जिम्मेदार वह नेतृत्व या स्थितियां थी जिसने आजादी के बाद सामाजिक आधारों को बदले बगैर लोकतंत्र की कल्पना की थी. इस लोकतंत्र के आधार पर ही जनता को विकास का वादा किया गया था. लेकिन जैसे-जैसे समय बितता गया किए गए वादों की कलई खुलती गई.

ऐसे लोकतंत्र में भला बच्चे कैसे सुरक्षित रह सकते हैं. रघुवीर सहाय को बच्चों के यातनामय वर्तमान के साथ ही उनके आने वाले भविष्य की भी चिंता है.'बड़ी हो रही है' कविता में रघुवीर सहाय इसी चिंता को अभिव्यक्त करते हैं...

" वह बड़ी होगी
डरी और दुबली रहेगी
और मैं न होऊंगा
एक और ही युग होगा
जिसमें ताकत ही ताकत होगी
और चीख ना होगी"6

बच्चों के भविष्य के प्रति सहायजी की चिंता अकारण नहीं थी. रघुवीर सहाय यह जानते थे की जो लोकतंत्र रोटी, सुरक्षा, स्वतंत्रता जैसी जरूरी चीजें मुहैय्या नहीं कर सकता, वह देश के भविष्य का क्या सोचेगा.

निष्कर्ष:

स्पष्ट है कि साहित्य और लोकतंत्र का एक दूसरे के साथ घनिष्ठ संबंध है. लेखनी के माध्यम से साहित्यकार लोकतंत्र की अव्यवस्था पर तीखा प्रहार करता है, ताकि आम जनता इस लोकतंत्र के शोषण का शिकार ना हो. लोकतंत्र एक प्रकार की शासन व्यवस्था है, जिसमें सभी व्यक्ति को समान अधिकार प्राप्त हो. एक अच्छा लोकतंत्र वह है जिसमें सामाजिक और राजनीतिक न्याय के साथ -साथ आर्थिक न्याय की व्यवस्था भी हो. जब हमारा लोकतंत्र रोटी, सुरक्षा, स्वतंत्रता जैसी आवश्यक जरूरतें पूरी करेगा, तभी सही अर्थ में हमारा लोकतंत्र सफल हो पाएगा. जरूरी है हम सभी को हर संभव प्रयास कर लोकतंत्र को सुरक्षित रखना है, ताकि इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में समाज का कोई भी व्यक्ति अव्यवस्था का शिकार ना हो.

संदर्भ:

1)सुदामा पांडे का प्रजातंत्र,धूमिल,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली
2)सुदामा पांडे का प्रजातंत्र,धूमिल,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली
3)संसद से सडक तक,धूमिल,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली
4)भारतनामा,सुनिल खिलनानी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5)आत्महत्या के विरुद्ध, रघुवीर सहाय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
6) हंसो- हंसो जल्दी हंसो, रघुवीर सहाय, नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली.